[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3480

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

# शास्त्रीय नृत्य में नवीन प्रयोग

**डॉ. सोनल शर्मा**
नृत्य विभाग
माता जीजाबाई शाससकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय मोती तबेला, इन्दौर

संस्कृति किसी भी देश प्रदेश, अंचल, गाँव शहर की पहचान होती है। भारत सांस्कृतिक समृद्धि से ओतप्रोत एक देश है। संस्कृति के निर्माता कई तत्व होते हैं। उन तत्वों में नृत्य व संगीत सबसे सशक्त तत्व होते हैं। भारत एकमात्र ऐसा देश है जहॉ पर नृत्य संगीत के लिए शास्त्रों की रचना की गई। शास्त्रों में संगीत व नृत्य नाट्य आदि के लिए नियम बनाए गए । इन शास्त्रीय नियमों के अन्तर्गत आने वाले नृत्य संगीत को शास्त्रीय नृत्य व संगीत की संज्ञा प्राप्त हुई।

भारत में सात शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ हैं। अगर प्रत्येक के इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तो हमें दृष्टिगोचर होगा कि प्रत्येक के प्राचीन एवं वर्तमान स्वरूप में कई परिवर्तन हुए नृत्य को और दर्शनीय बनाने के लिए कई नवीन प्रयोग किए गए। यह नवीन प्रयोग उसके नर्तन भेदों में, उसके प्रदर्शन क्रम में, उसके संगीत में, उसकी वेशभूषा में किए गए।

**1. नवीन प्रयोग शास्त्रीय नृत्य शैलियों के नर्तन पक्ष में** – साहित्य नृत्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। साहित्य नृत्य की भाषा है जिसके द्वारा मोन नृत्य को वाणी प्राप्त होती है। साहित्य के अन्तर्गत भी काव्य नृत्य को अभिनय पक्ष प्रदान करता है। भारत में प्रचलित शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ भारत के भिन्न भिन्न हिस्सों से सम्बंध रखती हैं। जैसे कथक उ.प्र. भरतनाट्यम दक्षिण भारत इसी तरह अन्य भी। प्रत्येक प्रदेश की प्रादेशिक भाषा का अपना साहित्य है जिसका प्रयोग इन नृत्य शैलियों में होता है। कथक भारत की सबसे अधिक परिवर्तन को अपने में समाहित करने वाली नृत्य शैली है भारत में जितने भी बाहरी आक्रमण हुए उसका सबसे अधिक प्रभाव कथक पर पड़ा। कथक का सबसे प्राचीन स्वरूप था पौराणिक कथाओं को गाते हुए अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करना। मुस्लिम आए और कथक का अध्यात्मिक स्वरूप खो गया। मुस्लिम शासन काल में कथन के धरानों का उद्य हुआ। कथक के घरानों ने कथक को कई नवीन अंग प्रदान किए या यूँ कहें कि कथक का जो भी स्वरूप हम आज देखते है वह इन्ही घरानों की देन है।

कथक के कई ऐसे विद्वान हुए जिसने इस नृत्य को बहुत कुछ दिया जिसमें एक नाम वाजिद अली शाह का है। नवाब साहब ने नृत्यात्मक नाट्य इन्द्रसभा आदि की रचना कर कथन के अन्तर्गत नृत्य नाटिकाओं का सृजनकर कथन की कथा प्रस्तुततिकरण की जो विस्तृत परम्परा थी उसे अधिक परिष्कृत रूप के साथ पुनर्जीवित किया । जिसे आगे आने वाले कथक नृत्यकारों ने ओर अधिकृत समृद्धशाली बना दिया। ठुमरी कथन का महत्वूपर्ण अंग है अपने प्राचीन स्वरूप में ठुमरी गेय रूप में नही थी परन्तु वाजिद अली शाह के समय में ठुमरी को एक गायन शैली के रूप में विकसित किया गया जो बाद में नृत्य शैलियों में प्रयोग की गई । गीत गोविन्द वनमालीदास आदि कवियों के काव्य का प्रयोग अधिकतर ओडिसी, भरतनाट्यम आदि नृत्यों में प्रयोग होता है परन्तु कथकों ने कथक में इनका प्रयोग किया ।

भरतनाट्यम के वर्णम अंश में नृत्यांगनाओं द्वारा अन्य भाषा के कवियों की रचनाओं को स्थान दिया जा रहा है। सुश्री पद्मा सुब्रमण्यम् ने बंगाली वर्णम् की रचना की।

कुचीपुड़ी नृत्य का तो सबसे पहला नवीन प्रयोग उसे नृत्य नाट्य से एकल नृत्य में परिवर्तित करना है। राधा राजा रेड्डी ने इस नृत्य को लोकप्रिय बनाने के लिए इसमें आधुनिक मंच के अनुकूल कई परिवर्तन किए। जैसे राधा राजा रेड्डी ने नवीन साहित्य का प्रयोग कुचीपुड़ी नृत्य में किया। कूचीपूड़ी के केवल नृत्यात्मक पक्ष को युगल रूप में प्रस्तुत किया ।

ओडिसी नृत्य में भी हिन्दी कवियों की कविताओं पर अभिनय प्रस्तुत किया जाता है। नवीन स्वरपल्लवियों को राग रागिनी में गूँथकर प्रस्तुत किया जाता है।

लगभग समस्त भारतीय नृत्य शैलियां अपने प्रदर्शन में एकल प्रयोज्या हैं। परन्तु आजकल समूह नृत्य को अत्याधिक पसन्द किया जाता है। इस कारण सभी को समूह नृत्य रूप में किया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आज कल का नृत्य के क्षेत्र में सबसे नवीन प्रयोग फ्यूजन डांस है। फ्यूजन डांस से तात्पर्य दो या उससे अधिक नृत्य शैलीयों का आपस में समन्वय है। फ्यूजन डांस देखने में दर्शनीय व मनोरंजक होता है । शास्त्रीय नृत्य शैलीयों में भी इसका प्रयोग किया जाता है उदाहरण के तौर पर अभिनेत्री हेमा मालिनी द्वारा की जाने वाली नृत्य नाटिका द्रौपदी में कुचीपुड़ी के अतिरिक्त छाऊ नृत्य का भी समावेश किया गया है। कथक नृत्य में बिरजू महाराज ने बैले नृत्य का प्रयोग किया। बैले नृत्य का प्रयोग विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों में किया गया। बैले के नाट्यात्मक व नृत्यात्मक दोनो स्वरूप होते है। नृत्यात्मक स्वरूप के अन्तर्गत संगीत पर लयात्मक अभिव्यक्ति होती है। जिसका प्रयोग किसी भी नृत्य शैली में सहजता से हो जाता है।

**2. शास्त्रीय नृत्य शैलियों के वाद्यवृन्द में नवीन प्रयोग –** भारत वर्ष में जितनी भी शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ है। उनमें वाद्यवृन्द अत्यंत परम्परागत है अर्थात यह सुनिश्चित है कि किस नृत्य शैली के साथ कौन–कौन से वाद्य प्रयुक्त होंगे। परन्तु वर्तमान में परम्परागत वाद्यो के साथ आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यो का प्रयोग भी शास्त्रीय नृत्यों में होता है। जो नृत्य के प्रस्तुतिकरण को तो प्रभावशाली बनाता ही है। साथ ही परम्परा के साथ आधुनिकता को भी जोड़ता है। उदाहरण के लिए सिन्थेसाइजर आक्टोपेड आदि इलेक्ट्रॉनिक वाद्यो का प्रयोग नृत्य शैलियों में किया जाता है। जो नृत्य या नृत्यनाटिकाओं में प्रभावशाली वातावरण निर्मित करने में अत्यधिक सहायक होते हैं।

**3. नृत्य शैलियों की वेशभूषा तथा रूपसज्जा में नवीन प्रयोग –** वेशभूषा किसी भी नृत्य शैली की प्रथम पहचान होती है प्राचीन समय में किसी भी नृत्य शैली की ऐसी कोई निर्धारित वेशभूषा नही थी। परन्तु आधुनिक मंच के अनुरूप प्रत्येक नृत्य शैली की वेशभूषा निर्धारित हो गई । कथक में लंहगा, साड़ी, चूड़ीदार कुर्ता, अनारकली भरतनाट्यम की छः भागों में विभक्त वेशभूषा श्रीमती रूकमणी देवी अरून्डेल की देन है। इसी तरह मणिपुरी, कुचीपुड़ी, ओडिसी आदि सभी नृत्यों की वेशभूषा श्रीमती रूकमणी देवी अरून्डेल की देन है। इसी तरह मणिपुरी, कूचीपूड़ी, ओडिसी आदि सभी नृत्यों की वेशभूषा परम्परओं को ध्यान में रखकर बनाई गई ताकि वह मंच पर हो रहे नृत्य के प्रस्तुतिकरण को दर्शनीय तथा अधिक प्रभावशाली बना सकें।

कथकली नृत्य में आहार्य अभिनय अर्थात रूपसज्जा का अत्यधिक महत्व होता है। परम्परागत तरीकों से रूपसज्जा करने में बहुत समय लगता था। आजकल आधुनिक रूपसज्जा के तरीकों को अपनाकर रूपसज्जा कम समय में नृत्य के उपयुक्त हो जाती है।

**4. आधुनिक ध्वनि व प्रकाश व्यवस्था की नवीन तकनीकों का नृत्य में प्रयोग –** वर्तमान में ध्वनि व प्रकाश व्यवस्था के अभाव में नृत्य प्रदर्शन की कल्पना करना असम्भव है। प्रकाश व्यवस्था का प्रयोगकर नृत्य को अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है। उदाहरण के लिए अगर नृत्य नाटिका अथवा समूह नृत्य किया जा रहा है। उसमें मंच के एक ही हिस्से को प्रकाशमान करना है बाकि हिस्से को नहीं दिखाता तो बिन्दु प्रकाश के द्वारा केवल उसी हिस्से को प्रकाशमान किया जाता है। ध्वनि यंत्रों के द्वारा विभिन्न तरह की ध्वनियों जैसे मेघ गर्जना, जल प्रवहा ध्वनि आदि का प्रयोग नृत्य नाटिकाओं में किया जाता है। घुँघरू, प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य शैली में धारण किए जाते है। कथक नृत्य में घुंघरूओं का अधिक प्रयोग होता है तथा एक घुँघरू ध्वनि निकालने जैसे चमत्कारिक कार्य भी किए जाते है। पुराने समय में नृत्य प्रदर्शन के समय दर्शकों को एक घुँघरू ध्वनि का श्रवण करवा पाना अत्यधिक कठिन था परन्तु आजकल माइक के द्वारा धीमी से धीमी ध्वनि भी दर्शकों को आसानी से सुनाई दे जाती है। इस तरह ध्वनि व प्रकाश की नवीन तकनीकों के संयोजन के द्वारा नृत्य को अधिक दर्शनीय व शोभनीय बनाया जाता है।

परिवर्तन विकास के लिए आवश्यक होता है व नवीन प्रयोग विकास को उसके चरमोत्कर्ष पर ले जाते है। शास्त्रीय नृत्यों में उसके परम्परागत स्वरूप को क्षति न पंहुचाते हुए उसमे नवीन प्रयोगो ने शास्त्रीय नृत्य शैलियों को न सिर्फ भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक उच्चकोटि के स्थान पर स्थापित कर दिया। यदि यही शास्त्रीय नृत्य अपने परम्परागत स्वरूप में होते तो यह मन्दिरों की परिधि को पार ही नही कर पाते, विद्वानों के प्रयासों ने प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य को मंच पर पंहुचाया तथा विभिन्न विद्वत विचारों ने शास्त्रीय पक्षों में नवीन प्रयोगों को जोड़कर इस समृद्ध भारतीय संस्कृतिक धरोहर को ओर अधिक समृद्धशाली बना दिया।

***संदर्भ –***

1 *कथक नृत्य शिक्षा भाग 1*
2 *कथक नृत्य शिक्षा भाग 2*
3 *इन्टरनेट पर Google Search*